National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024; 1(56): 231-233
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

**डॉ. रवि कुमार मीना**
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

**Correspondence:**
**डॉ. रवि कुमार मीना**
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

# साहित्यशास्त्र शिक्षण हेतु अन्तरजालीय स्रोत

(sāhityaśāstra śikṣaṇa hetu antarajālīya srota)

**डॉ. रवि कुमार मीना**

**सारांश (Abstract):-**

संस्कृत साहित्य विश्व का सर्वाधिक प्राचीन, सम्पन्न एवं सर्वश्रेष्ठ साहित्य है। वेदों में मानव जीवन के सभी अभ्युदय एवं नि:श्रेयस सम्बन्धी विषयों का वर्णन किया गया है। वैदिक संस्कृत साहित्य का मूलाधार वेदशब्द राशि है। कम्प्यूटर तथा मोबाइल के इस युग में सब कुछ ऑनलाइन करना आसान हो गया है। अपनी ज्ञान परम्परा को सब तक पहुँचाना भी आसान हो गया है। पारम्परिक शिक्षा की जगह आजकल ई-शिक्षा ले रही है। इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य साहित्यशास्त्र से सम्बन्धित ऑनलाइन जितने भी अन्तरजालीय स्रोत हैं उन सभी स्रोतों का डिजिटलाइजेशन कर छात्रों एवं शिक्षकों के लिये वेब आधारित एक प्लेटफॉर्म तैयार करना है जहाँ से जिज्ञासु किसी भी समय इन्टरनेट के माध्यम से साहित्यशास्त्र से सम्बन्धित किसी भी ग्रन्थ विशेष के सन्दर्भ में सरलता से ज्ञान प्राप्त कर सके तथा इसकी सहायता से अन्य जिज्ञासुओं को सिखा भी सकें।

संकेत शब्द (**Key words**):- साहित्यशास्त्र, अलंकारशास्त्र, छन्द:शास्त्र, ध्वनिशास्त्र इत्यादि।

**साहित्य:-**

**"सहितस्य भावः साहित्यम्"** अर्थात् जिसमें सहित का भाव हो, उसे साहित्य कहते हैं[1]। साहित्य मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति का एक बहुत ही प्रमुख माध्यम है। यह अपने ज्ञान के अमृत से समाज एवं संस्कृति दोनों को सार्थक दिशा देने का एक सशक्त पर्याय है। साहित्य के द्वारा मनुष्य की आत्मा और बुद्धि निर्मल होती है। संस्कृत में एक शब्द है वांङ्मय। भाषा के माध्यम से जो कुछ भी कहा गया, वह वांङ्मय है। साहित्य के संदर्भ में संस्कृत की इस परिभाषा में मर्म है – **शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्**। यहाँ शब्द और अर्थ के साथ भाव की आवश्यकता मानी गयी है।

इसी परिभाषा को व्यापक करते हुए संस्कृत के ही एक आचार्य विश्वनाथ महापात्र नें "साहित्यदर्पण" नामक ग्रंथ लिख कर "साहित्य" शब्द को व्यवहार में प्रचलित किया[2]। संस्कृत के ही एक आचार्य कुंतक व्याख्या करते हैं कि जब शब्द और अर्थ के बीच सुन्दरता के लिये स्पर्धा या होड लगी हो, तो साहित्य की सृष्टि होती है। केवल संस्कृतनिष्ठ या क्लिष्ट लिखना ही साहित्य नहीं है न ही अनर्थक तुकबंदी साहित्य कही जा सकेगी। भाव किसी सृजन को वह गहरायी प्रदान करते हैं जो किसी रचना को साहित्य की परिधि में लाता है। किसी भाषा के वाचिक और लिखित (शास्त्रसमूह) को साहित्य कह सकते हैं।

भारत का संस्कृत साहित्य ऋग्वेद से आरम्भ होता है। व्यास, वाल्मीकि जैसे पौराणिक ऋषियों ने महाभारत एवं रामायण जैसे महाकाव्यों की रचना की। भास, कालिदास एवं अन्य कवियों ने संस्कृत में नाटक लिखे। भक्ति साहित्य में अवधी में गोस्वामी तुलसीदास, ब्रज भाषा में सूरदास तथा रैदास, मारवाड़ी में मीराबाई, खड़ीबोली में कबीर आदि प्रमुख हैं। एक परिभाषा में यह भी कहा गया है कि

'साहित्य समाज का दर्पण' है। साहित्य में रचनाकार अपने सामाजिक सरोकारों से बिल्कुल भी विमुक्त नहीं हो सकता।

**साहित्य के भेद:-**

मुख्यरूप से साहित्य को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। (1) पद साहित्य (2) गद्य साहित्य।

**पद साहित्य –** महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य, कविता, पद इत्यादि।

**गद्य साहित्य –** उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना, जीवनी, संस्मरण आदि।

**साहित्य का उद्देश्य:-**

संस्कृत साहित्य के समय में साहित्य के भीतर, पहले स्तर को पकड़ने की चेष्टा, साहित्य-शास्त्रियों ने की थी। कहीं साहित्य के उद्देश्य का उन्होंने कभी "भावों" की प्रस्तुति बताया तो कभी "कला" की। बाद में कभी साहित्य का उद्देश्य "आदर्शों" की स्थापना रहा तो कभी "यथार्थ" की। आचार्य मम्मट ने साहित्य के उद्देश्य को बताते हुए कहा है कि-

**"काव्यं यशसे, अर्थकृते, व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये**

**सद्य: परवितृतय: कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे[3]"**

आचार्य मम्मट कहते हैं कि काव्य का उद्देश्य यश की प्राप्ति, अर्थ की प्राप्ति और शिव यानि मंगल की स्थापना है। आचार्य मम्मट वेद्यन्तर को विगलित कर परमानंद की अनुभूति देना भी साहित्य का उद्देश्य मानते हैं। इस परिभाषा की प्रथम पंक्ति कालातीत है। सबका मंगल चाहना, दु:ख पाकर दु:ख की आँच को समझना और उस आँच में तपते हृदयों के साथ 'सम-वेदना', समत्व स्थापित कर, सहयात्री, सहभोगी, सहयोगी के रूप में आना - साहित्य का सदा से उद्देश्य रहा है चाहे वह 'मेघदूत' के यक्ष के विरह का दु:ख हो या मुक्तिबोध के "ब्रह्मराक्षस" सब युगों में साहित्य ने दु:ख में, जीवन में संघर्षों में साँझा करने की चेष्टा की है।

**अन्तरजालीय स्रोत:-**

इस शोधपत्र में साहित्यशास्त्र से सम्बन्धित जो भी ऑनलाईन सामाग्री प्राप्त होती है उसका विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

1.**ई-पुस्तकालय :** https://epustakalay.com/list-of-all-books/ साहित्यशास्त्र या संस्कृत भाषा से सम्बन्धित हजारों की संख्या में पुस्तकें अन्तरजालीय स्रोत ई-पुस्तकालय की सहायता से हम कभी भी और कहीं भी ऑनलाईन किसी भी पुस्तक को अध्ययन या अध्यापन में सक्षम हैं। इसमें एक तरफ सभी लेखकों की सूची भी दी गई है। इस वेबसाइट पर सभी प्रकार की धार्मिक पुस्तके उपलब्ध हैं। जैसे- हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लामी धर्म और यहूदी धर्म से सम्बन्धित सभी पुस्तकें ऑनलाईन पीडीएफ रूप में प्राप्त होती हैं। इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें, लोकप्रिय उपन्यास, तकनीक व कम्प्यूटर, महापुरुषों की जीवनी, सभी नाटक, ज्योतिष, आयुर्वेद, संगीतशास्त्र, मराठी पुस्तकें, लोककथा और अलग-अलग प्रकार की कहानियों से सम्बन्धित सैंकडों पुस्तकों का अध्ययन इसकी सहायता से कर सकते हैं। यहाँ से आप किसी भी समय कोई भी पुस्तक डाउनलोड कर सकते हैं।

2**. साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्द कोष** :

https://epustakalay.com/book/16556-sahitya-shastra-ka-paribhashik-shabdakosh-by-rajendra-diwedi/ इस शब्दकोश में साहित्यशास्त्र से सम्बन्धित जो भी शब्दावली है उन सभी का संग्रह प्राप्त होता है।

3. **संस्कृत साहित्य सोपान गूगल पुस्तक :**

https://books.google.co.in/books?id=eb-lnWNZKq4C&printsec=frontcover&hl=en#v=onepage&q&f=false

4. **GRETIL** - Göttingen Register of Electronic Texts in Indian Languages and related Indological materials from Central and Southeast Asia-

इस वेबसाइट पर वेद, वेदांग, व्याकरणशास्त्र से सम्बन्धित सभी पुस्तकें ऑनलाईन पीडीएफ रूप में प्राप्त होती हैं। संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकें, तकनीक व कम्प्यूटर, संस्कृत नाटक, ज्योतिष, आयुर्वेद तथा संगीतशास्त्र विषयों से सम्बन्धित सैंकडों पुस्तकों का अध्ययन इस वेबसाइट की सहायता से कर सकते हैं। यहाँ से आप किसी भी समय कोई भी पुस्तक डाउनलोड कर सकते हैं **:** http://gretil.sub.uni-goettingen.de/gretil.html

5. इस वेबसाइट पर वैदिक साहित्य, उपनिषद्, पुराण, महाभारत, रामायण, भगवद्-गीता, वेदान्त, आधुनिक पुस्तकें ऑनलाईन पीडीएफ रूप में प्राप्त होती हैं **:** https://www.sacred-texts.com/hin/index.htm

6**. Clay Sanskrit Library**-

इस वेबसाइट पर संस्कृत भाषा से सम्बन्धित पुस्तकें ऑनलाईन पीडीएफ रूप में प्राप्त होती हैं **:** http://claysanskritlibrary.org/

In the late 1990's, when John Clay started to work on the concepts for the Clay Sanskrit Library ("CSL"), his key objective was to produce fifty titles. Today, the list of published volumes encompasses fifty-six works, as shown at http://www.claysanskritlibrary.org/volumes_current.pp. Published volumes may be purchased through the distribution sources listed at http://www.claysanskrit-library.org/order.php.

**7. TITUS (Thesaurus Indogermanischer Text- und Sprachmaterialien)-**

इस वेबसाइट पर संस्कृत साहित्य, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य और अन्य सभी साहित्यों से सम्बन्धित पुस्तकें ऑनलाईन पीडीएफ रूप में प्राप्त होती हैं **:** http://titus.uni-frankfurt.de/indexe.htm?-/texte/texte2.htm#ind

**8. हिन्दी समय**-

इस वेबसाइट पर हिन्दी साहित्य, बाल साहित्य, कहानी, कविता, व्यंग्य, हिन्दी शब्दकोश और हिन्दी साहित्य के लेखकों से सम्बन्धित पुस्तकें ऑनलाईन रूप में प्राप्त होती हैं **:** https://www.hindi-samay.com/content

**9. यूनियनपीडिया (Unionpedia)**- इस वेबसाइट पर सभी विषयों के साहित्य से सम्बन्धित सामाग्री प्राप्त होती है**:** https://hi.unionpedia.org

**10. Rajbhasha.net (राजभाषा हिन्दी)**- इस वेबसाइट पर हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित सभी सामाग्री उपलब्ध होती है : http://rajbhasha.net/drupal514/node/44

**11. Wikiwand**- इस वेबसाइट पर सभी विषयों के साहित्य से सम्बन्धित सामाग्री प्राप्त होती है **:** https://www.wikiw-and.com

**12. काशीकथा साहित्यकार-** इस वेबसाइट पर काशी में प्रसिद्ध सभी विषयों के साहित्य से सम्बन्धित सामाग्री प्राप्त होती है **:** http://kashikatha.com

**13.भारतीय साहित्य संग्रह-** https://www.pustak.org-/index.php

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-**


1. आचार्य विश्वेश्वर, 2011. *काव्यप्रकाश*, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिटेड, आज भवन, सन्त कबीर मार्ग, वाराणसी।
2. अभिमन्यु, मन्नालाल (सम्पा.). 2012. *अमरकोष*. चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी।
3. दाहाल, लोकमणि (सम्पा.), द्विवेदी, त्रिलोकीनाथ (सम्पा.) एवं द्विवेदी, शिवप्रसाद (सम्पा.). 2013. *साहित्यदर्पण*. चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।
4. शास्त्री, शालेग्राम (सम्पा.). 1977. *साहित्यदर्पण*. मोतीलाल बनारसी दास. दिल्ली।
5. सहाय, राजवंश. 1996. *संस्कृत साहित्य कोश*. चौखाम्बा विद्याभवन. वाराणसी।
6. https://www.pustak.org/index.php
7. http://kashikatha.com
8. https://www.wikiwand.com
9. Tripod, 2016, Web: http://taxonomist.tripod.com-/indexing/autoindex.html
10. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2020, Web: https://en.wiktionary.org/wiki/bottleneck

**कोशग्रन्थ:**

1. आप्टे, वामन शिवराम. 1966. *संस्कृत-हिन्दी कोश*. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स. दिल्ली।
2. देव, राजा राधाकान्त. 2020. *शब्दकल्पद्रुम.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।
3. भट्टाचार्य, तारानाथ-तर्कवाचस्पति. 1962. *वाचस्पत्यम् : बृहत् संस्कृताभिधानम्.*
4. Williams, Monier**.** Williams Monier Online Dictionary (2008 revision): University of Cologne: http://www-.sanskrit-lexicon.uni-koeln.de/monier/ (Obtained on January 07, 2020).


**संदर्भ:**

1. काव्यप्रकाश पृष्ठ संख्या – 04.
2. शास्त्री, शालेग्राम (सम्पा.). 1977. साहित्यदर्पण. मोतीलाल बनारसी दास. दिल्ली।
3. काव्यप्रकाश पृष्ठ संख्या – 10**.**